प्रश्न 2. युधिष्ठिर के प्रति वनेचर की उक्ति का वर्णन करें।
अथवा, दुर्योधन की शासन-व्यवस्था का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर– महाकवि भारवि ने अपने महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्' में राजनीति के सारे गुणों एवं कार्य प्रणालियों, शासन की नीतियों का उल्लेख किया है। दूसरे शब्दों में, 'किरातार्जुनीयम्' को राजनीति का आधार-ग्रंथ कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस महाकाव्य के प्रथम सर्ग में वनेचर की सुन्दर उक्ति के बहाने महाकवि ने दुर्योधन की सुन्दर शासन प्रणाली का वर्णन किया है।

प्रथम सर्ग में श्लोक संख्या 4 से लेकर श्लोक संख्या 23 तक में दुर्योधन सुशासन का वर्णन समुचित एवं नपे-तुले शब्दों में करता है–

"हे राजन् कार्य में नियुक्त किये हुए अपने अनुचर ही राजाओं के नेत्र हुआ करते हैं। अतः राजाओं एवं गुप्तचरों दोनों को ही एक-दूसरे पर विश्वास करना चाहिए।"

अतः जो मंत्री अथवा मित्र अपने राजा को हितकर उपदेश नहीं देता है, वह निन्दा के योग्य है तथा जो राजा अपने इष्ट मित्र अथवा मंत्री की हितकर बातें नहीं सुनता है, वह नीच स्वामी है। इस समय दुर्योधन के हित एवं मंत्री दोनों ही अनुकूल हैं। अतः समस्त वैभव सदैव ही उससे अनुराग कर रहा है। इस समय दुर्योधन राजा होकर भी आपसे सम्भावित विपदाओं की आशंका से भयभीत रहता है। वह छल से जीते हुए राज्य को अब न्याय द्वारा प्रजा वर्ग के हृदय को जीतने की इच्छा से सुंदर शासन कर रहा है।

वह दुर्योधन हृदय से तो दुष्ट है फिर भी बाहरी हाव-भाव से आपके वेश एवं कीर्ति को जीतने की इच्छा से दान-दाक्षिण्यादि गुणों द्वारा अपनी उज्ज्वल कीर्ति का प्रसार कर रहा है। वह दुर्योधन काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान तथा मद इन छः शत्रुओं को पराजित कर पुरुषों के लिए दुर्लभ, मनु द्वारा प्रतिपादित पदवी को प्राप्त करने की अभिलाषा से आलस्य का परित्याग करके रात-दिन न्याय की नीति द्वारा अपने यश का विस्तार करता जा रहा है। अपने घमण्ड का परित्याग

करके वह अपने सेवकों से भी मित्र के समान व्यवहार कर रहा है और मित्र तो वहाँ उसके मालिक की ही तरह हैं। अर्थात् दुर्योधन सभी लोगों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार कर रहा है। वह धर्म, अर्थ, एवं काम का यथायोग्य विभाजन करके किसी के भी साथ पक्षपात नहीं करता है। और उसके गुणों से अनुराग करके आपस में धर्म, अर्थ, साम, दाम, दण्ड, एवं नीति इत्यादि का समुचित प्रयोग बिना दान क्रिया के साथ नहीं करता है। वह सादर प्रचुर धन-दान कर रहा है। वह गुण एवं अनुराग दोनों से ही युक्त होकर सत्पात्र एवं सुयोग्य व्यक्तियों को दान देता रहता है। वह मनु द्वारा प्रतिपादित साम, दाम तथा दण्ड एवं नीति का समुचित प्रयोग करता रहता है।

वह हमेशा धर्म के नियमों का पालन करता हुआ शासन कर रहा है। वह कभी भी क्रोध नहीं करता है। वह लोभादि का परित्याग करके श्रेष्ठ जनों द्वारा बताये हुए मार्ग से ही शत्रु, मित्र एवं पुत्र सभी के साथ समान रूप से दण्ड नीति का अवलम्बन करता है। यद्यपि हृदय से वह भयभीत है फिर भी वह अपने विश्वासी मित्रों को चारों ओर रक्षक बनाकर निडर होने का भाव प्रदर्शित करता है। कार्य की समाप्ति पर वह सेवकों को उनके कार्यों से भी अधिक सम्पदा पुरस्कारस्वरूप प्रदान करता है। उसके द्वारा समुचित स्थानों पर पर्याप्त कर पहुँचाये गये। विभाजन द्वारा संस्कृति साम, दाम, भेदादि उपाय से अपने परस्पर वैमनस्य का त्याग कर भविष्य में उत्तरोत्तर वृद्धि पानेवाली धन-संपदाओं को पैदा कर रही है। अपने अधीनस्थ राजाओं एवं राजकुमारों के रथों के घोड़े एवं हाथियों के सप्तछंद की सुगन्ध से भी दुर्योधन के सभामण्डप का आंगन हमेशा कीचड़युक्त बना रहता है। बहुत दिनों से उसको प्रजा की भलाई में लगे रहने के कारण, नदियों एवं नहरों से सिंचाई के साधन उपलब्ध होने से, प्रजावर्ग निरन्तर अपने खेतों में अच्छी फसलों का उत्पादन करता है। वहाँ बादलों पर निर्भर न होकर लोग बिना जुते ही सरलतापूर्वक अपने खेतों में अच्छी फसलें उगाते हैं। उसकी उदारता, दयालुता एवं कीर्ति से प्रसन्न होकर पृथ्वी कामधेनु के समान स्वयं ही वनों को उत्पन्न करती है जिसके सामने कुबेर की सम्पदा भी तुच्छ लगती है। वह सभी कार्यों का पूर्ण रूप से सम्पादन करके अपने गुप्तचरों द्वारा राजाओं की सभी गुप्त बातों का पता लगा लेता है। उसके योद्धा युद्धभूमि में अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसकी रक्षा करते हैं। वह दूसरे की बातों को जान जाता है परन्तु उसके कार्यों का पता पहले नहीं मिल सकता जबतक कि वह कार्य रूप में परिणत नहीं हो जाते।

वह कभी भी अपने धनुष पर डोरी नहीं चढ़ाता। और न किसी पर क्रोध ही किया करता है। फिर भी उसके गुणों से मुग्ध होकर उसकी आशाओं का पालन माला के समान शिरोधार्य करते हैं। वह अपने नवयौवन भाई दुःशासन को युवराज बनाकर पुरोहित के आदेशानुसार निद्रा का परित्याग कर अहर्निश प्रसन्न बना रहता है।

शत्रुरहित होकर वह निःशंक भाव से समस्त भूमण्डल पर शासन कर रहा है। वह चिरकाल से शासन करता हुआ समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का पालन करता हुआ प्रसन्नचित्त दिखायी पड़ता है। फिर भी वह आनेवाली (आपकी ओर से) सम्भावित विपत्तियों से डरा हुआ रहता है। दुर्योधन के इस प्रकार सुन्दर शासन से प्रसन्नचित्त जनता अब आपलोगों की कीर्तिलता को भूलती जा रही है। अतः, अब आपलोगों की अधिक देर नहीं करनी चाहिए, नहीं तो उसे बाद में जीतना कठिन हो जायेगा।

उसने समस्त राज्य को ईति-भीति आदि शत्रुओं से रहित कर दिया है। अर्थात् टिड्डी आदि उपद्रवों से खेतों की रक्षा की है और बाहर से कोई भी राजा उसकी ओर अर्थात् उसके राज्य पर आक्रमण करने का साहस नहीं करते हैं। अतः प्रजावर्ग में निरन्तर सुख एवं शांति का साम्राज्य कायम है और जबतक यह व्यवस्था कायम रहेगी तबतक कोई भी उसे परास्त नहीं कर सकता है। अर्थात् जिस राजा के राज्य में प्रजा विद्रोह नहीं कर सकती उसे बाहरी राजा भी परास्त करने का साहस नहीं कर सकता। इस प्रकार दुर्योधन की सुन्दर शासन नीतियों का बखान कर वनेचर युधिष्ठिर से पुरस्कृत होकर चला गया।